हरियाणवी लोक संगीत में प्रचलित वाद्य

डॉ. उज्जवल
सहायक प्रोफेसर, संगीत (गायन)
एम.डी.एस.डी गर्ल्स कॉलेज अम्बाला शहर

हरियाणा का लोक संगीत अपने विशिष्ट स्थान के कारण विख्यात है। यहां के लोक संगीत में 'रागिनी' नामक शैली विशेष रूप से प्रचलित है। यद्यपि यह एक स्वच्छंद शैली है किंतु कहीं–कहीं इसमें शास्त्रीय संगीत का स्पष्ट रूप देखने को मिलता है। हरियाणा रागिनी में दुर्गा, भूपाली की झलक दिखाई देती है। यहां के लोक संगीत में प्रचलित वाद्यों की बात की जाए तो विभिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग होता है जोकि हरियाणवी संस्कृति को प्रकट करता है। हरियाणा के लोक गीतों में प्रचलित वाद्यों से पहले वाद्यों के प्रकार का वर्णन करना आवश्यक है। वाद्यों के चार प्रकार है, जिसमें तंत्री वाद्य, सुशीर वाद्य, घन वाद्य आते हैं। तंत्री वाद्य में तार वाले वाद्यों को लिया जाता है, जिसे गज, नाखून इत्यादि का प्रयोग करके बजाया जाता है, जैसे सारंगी वाद्य से अभिप्राय चमड़े से बने हुए वाद्य हैं जिसे हाथों से थाप देकर लकड़ी की डंडी इत्यादि से बजाया जाता है, जैसे ढोलक और डफली। सुषिर वाद्यों का मतलब फूंक वाले वाद्य है जिसमें फूंक मारकर या कृत्रिम रूप से हवा उत्पन्न की जाती है और वाद्यों में से ध्वनि उत्पन्न की जाती है जैसे बांसुरी शहनाई इत्यादि घन वाद्य हैं जो धातु से बने होते हैं। दो धातुओं को आपस में टकराने से या आघात करने से इन वाद्यों का वादन किया जाता है, जैसे घंटी, चिमटा इत्यादि।

हरियाणा में प्रचलित वाद्य यंत्र

घंटियां

यह सामान्यतः मंदिरों में आरतियां और कीर्तनों और अन्य धार्मिक प्रदर्शनों पर बजाई जाती हैं।

चिमटा

यह लंबे और चपटे लोहे के टुकड़े होते हैं जिन्हें एक तरफ से जोड़ा जाता है। जिन पर छोटी–छोटी घंटियां लगी होती है।

घड़ा

मिट्टी का घड़ा सबसे सस्ता वाद्य यंत्र है जो विभिन्न अवसरों पर ताल को बनाए रखने के लिए बजाया जाता है।

ढोलक

यह ढोल का छोटा रूप है जिसे ज्यादातर गुड़गांव जिला के अहीरों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।

ढोल

यह दो पक्षियों ढोल है जिसे दो छोटी लकड़ी की डंडियों से बजाया जाता है। यह बेलन कार लकड़ी का होता है जिसे दोनों तरफ से खाल से मढते हैं। इस वाद्य यंत्र की बहुत सी किसमें है यह विवाह उत्सव, कुश्ती प्रतियोगिता और नृत्य प्रदर्शनों आदि के अवसरों पर उपयोग में लाया जाता है।

बीन

इस यंत्र को अधिकांश सपेरे उपयोग में लाते हैं। खोखली तुम्बी में दो छोटी लकड़ी की नलियाँ लगाई जाती है। एक स्वर को निकालते हुए मूल स्वर के पृष्ठ नाद को बनाए रखती है, और दूसरी प्रदर्शक द्वारा स्वर उत्पन्न करने के लिए उपयोग में लाई जाती है।

शहनाई

इस तंत्री वाद्य को विशेष रूप से विवाह के अवसरों पर बजाया जाता है।

बांसुरी

यह प्राचीनतम वाद्य यंत्र है जिसे मुरली जैसे लोकप्रिय नाम से भी पुकारा जाता है। लकड़ी की खोखली डंडी में सात गोल छिद्र करके बनाया जाता है।

शंख

यह सबसे प्राचीन वाद्य यंत्र है। उपयोग में लाने से पहले शंख के आधार में इस प्रकार सावधानीपूर्वक छेद किया जाता है, कि इसका प्राकृतिक छेद ना बिगड़े। इस यंत्र को मंदिरों और तीर्थ स्थानों पर उपयोग में लाया जाता है। यह केवल पृष्ठ नाद उत्पन्न करता है। महाभारत युद्ध क्षेत्र में श्री कृष्ण द्वारा उपयोग में लाए गए शंख को पंचजन्य कहा जाता है।

खंजरी

यह डफ की छोटी किस्म है। अंतर केवल यह है कि इसके चारों ओर घुंगरू लगे होते हैं। इसे सामान्यतः एकल नृत्य प्रदर्शनों में उपयोग में लाया जाता है।

इक तारा

यह एक तार वाला वादय है और उंगलियों से बजाया जाता है। यह 1 मीटर लंबे बांस के टुकड़े का बना होता है जिसके एक सिरे पर बड़ा तुंबा लगा होता है।

झांझ

यह कांसे के दो बड़े गोल टुकड़े होते हैं। जो नृत्य या अन्य अवसरों पर धातु ध्वनि उत्पन्न करते हैं।

डमरु

यह बहुत छोटा ढोल होता है। यह भगवान शिव का प्रतीक है। जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे उन्होंने तांडव नृत्य के दौरान बजाया था। यह धार्मिक और अनुष्ठानिक लोक संगीत मैं विशेष रूप में गंगा नृत्य में उपयोग में लाया जाता है। यह जादूगर द्वारा जादू का खेल दिखाने के समय भी उपयोग में लाया जाता है।

घुंगरू

घुंगरू यह नृत्य के दौरान अपने टखनों पर बांधे जाते हैं, ताकि नृत्य को शक्ति प्रदान कर और प्रभावी बना सके। यह लय उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

डेरु

यह डमरु का बड़ा रूप है। लेकिन यह भी वही प्रयोजन पूरा करता है।

ताशा

यह एक एकपक्षीय घन वादय होता है जिसे दो छोटी डंडियों से बजाया जाता है इसे विशेष अवसरों पर और कभी–कभी नृत्य प्रदर्शन के अवसर पर भी बजाया जाता है।

नगाड़ा

यह एक पक्षीय ढोल है लेकिन यह बड़ा और भारी होता है और बजाते समय इसे जमीन पर रखा जाता है यह सामन्ती काल का अवशेष है जब राज्य घोषणाएं नगाड़ा बजाकर की जाती थी।

सारंगी

इस एक तंत्र यंत्र को उस गज के साथ बजाया जाता है जो पशु के बालों की लट को कमान रूपी लकड़ी पर चिपका कर बनाया जाता है। मुख्य गायक के साथ यह वाद्य का होना अति महत्वपूर्ण है। यह 60 सेंटीमीटर लंबे लकड़ी के टुकड़े को खोखला कर बनाया जाता है।

खड़ताल

यह लकड़ी के दो टुकड़ों पर लगे छोटे घुंगरू होते हैं और अन्य वाद्य यंत्रों की ताल के अनुसार लय को बनाए रखने के लिए उन्हें एक दूसरे से टकराते हैं।

झिल

यह नगाड़ा का छोटा रूप है और इसे छोटी डंडियों से बजाया जाता है। यह हमेशा ही नगाड़े के बाई और रखा जाता है। वास्तव में यह नगाड़े का एक भाग है जो तबले की तरह है।

डफ

यह एक पक्षीय ढोल होता है और नृत्य के साथ विशेष रूप से धमाल नृत्य के साथ बजाया जाता है। और यह महेंद्रगढ़ जिले में लोकप्रिय है। यह बनावट में बड़ा सरल होता है। और इसमें केवल एक खुला गोल फ्रेम होता है जो केवल एक तरफ से खाल से मढा होता है। यह हाथ से या छोटी डंडियों से बजाया जा सकता है। यह उत्सव संबंधी अवसरों पर भी बजाया जाता है।

मंजीरा

यह धात्विकझान्झो का एक जोड़ा होता है। जिसे लय उत्पन्न करने के लिए प्रयोग किया जाता है। नाथ परंपरा के जोगियों द्वारा अपनी प्रार्थना के दौरान इसका उपयोग किया जाता है।

हारमोनियम

मूल रूप से हारमोनियम भारत से संबंधित नहीं है। फिर भी हारमोनियम सांस्कृतिक प्रदर्शनों में दिखाई देता है। हरियाणा में यह सांग और किरतनों में संगत यंत्र के रूप में उपयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि हरियाणवी लोक संगीत में प्रचलित वाद्य हरियाणवी संस्कृति का परिचायक हैं। जिसे जन समुदाय

द्वारा पसंद किया जाता है। यद्यपि यह लोक संगीत शास्त्रीय नियमों से परे होते हैं लेकिन शास्त्रीय नियमों का कहीं न कहीं प्रयोग देखने को मिलता है। हरियाणवी वाद्य के प्रयोग से लोक संगीत की सुंदरता और बढ़ जाती है। इन सभी बातों का प्रयोग हरियाणवी लोक संगीत के साथ अन्य राज्यों के लोक संगीत के साथ भी प्रयोग किया जाता है। तथा शास्त्रीय संगीत में भी इन वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। हरियाणा के लोक संगीत में प्रचलित वाद्य संगीत के गौरव को बढ़ाने में सक्षम है। यद्यपि लोक संगीत अपनी सुंदरता के कारण वैसे ही लोकप्रिय है परंतु वाद्यों का प्रयोग इस संगीत में और चार चांद लगाता है।